



प्रेस विज्ञप्ति

आईआईटी भुवनेश्वर में विज्ञान और प्रौद्योगिकी की भारतीय परंपराएं: उनका अतीत, वर्तमान और भविष्य विषय पर एक सत्र आयोजित

भुवनेश्वर, 17 अप्रैल 2025: भारतीय ज्ञान परंपराओं के बारे में जागरूकता को बढ़ावा देने के अपने प्रयासों को जारी रखते हुए, प्रौद्योगिकी संस्थान (आईआईटी) भुवनेश्वर ने 'विज्ञान और प्रौद्योगिकी की भारतीय परंपराएं: उनका अतीत, वर्तमान और भविष्य' विषय पर एक सत्र का आयोजन किया। सत्र में मद्रास विश्वविद्यालय के पूर्व प्रोफेसर और वर्तमान में नीति अध्ययन केंद्र के अध्यक्ष के रूप में कार्यरत डॉ. एम. डी. श्रीनिवास की बातचीत और बातचीत शामिल थी। बता दें कि डॉ. श्रीनिवास को विज्ञान और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में वर्ष 2025 के लिए पद्मश्री के लिए चुना गया है। सत्र में 'उदयगिरी हॉल ऑफ लर्निंग' का उद्घाटन हुआ, जो छात्रों और संकाय सदस्यों के लिए उच्च मानक शिक्षण-सीखने का अनुभव प्रदान करने के लिए आईआईटी भुवनेश्वर में उपलब्ध तीसरा अत्याधुनिक बुनियादी ढांचा है। उल्लेखनीय है कि आईआईटी भुवनेश्वर पारंपरिक व्याख्यान के बजाय सीखने के सक्रिय और सहयोगात्मक तरीकों को बढ़ावा दे रहा है।

इस अवसर पर बोलते हुए, प्रोफेसर करमलकर ने कहा: "किसी की सांस्कृतिक जड़ों में एक मजबूत नींव विचारशील जीवन निर्णयों को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। जबकि विज्ञान और प्रौद्योगिकी सार्वभौमिक हैं, वैज्ञानिकों की पहचान और संदर्भ गहराई से प्रभावित करते हैं कि ज्ञान कैसे प्राप्त किया जाता है। इसलिए, विज्ञान और प्रौद्योगिकी की भारतीय परंपराओं का पता लगाना आवश्यक है, जो मूल्यवान दृष्टिकोण प्रदान करते हैं जो अक्सर मुख्यधारा की कहानियों से अनुपस्थित होते हैं।"

अपनी बातचीत और संवाद में डॉ. श्रीनिवास ने 'विज्ञान और प्रौद्योगिकी की भारतीय परंपराएं: उनका अतीत, वर्तमान और भविष्य' विषय पर एक व्याख्यान भी दिया। इस वार्ता ने भारतीय विज्ञान और प्रौद्योगिकी के विकास का एक चयनात्मक अवलोकन प्रस्तुत किया, इसकी जड़ें वैदिक काल में खोजीं और मूल सभ्यतागत मूल्यों में इसकी नींव और सभी जीवन के अंतर्संबंध में भारतीय विश्वास पर जोर दिया। इसमें इस बात पर प्रकाश डाला गया कि कैसे, 19वीं शताब्दी की शुरुआत तक, भारतीय वैज्ञानिक और तकनीकी प्रथाओं को व्यापक रूप से पढ़ाया जाता था, उनमें नवाचार किया जाता था और भारत की वैश्विक प्रतिष्ठा और आर्थिक ताकत में महत्वपूर्ण योगदान दिया जाता था। उन्होंने बताया, "ब्रिटिश शासन के दौरान गिरावट शुरू हुई, जिसका मुख्य कारण औपनिवेशिक शिक्षा प्रणाली को लागू करना था, जिसने पारंपरिक शिक्षा को बाधित कर दिया। जबकि भारतीय विद्वानों ने इस ज्ञान को पुनर्जीवित करने के प्रयास किए हैं, लेकिन इसका अधिकांश भाग खंडित और मुख्यधारा की शिक्षा

से बाहर है।" उन्होंने इन स्वदेशी परंपराओं में निहित पुनरुत्थान की वकालत की, आधुनिक समय में इसकी प्रासंगिकता और अनुप्रयोग सुनिश्चित करने के लिए उच्च शिक्षा और स्कूल पाठ्यक्रम दोनों में भारत की वैज्ञानिक विरासत को दस्तावेजीकरण, अनुसंधान और एकीकृत करने के लिए तत्काल संस्थागत प्रयासों का आह्वान किया।

कार्यक्रम का संचालन प्रोफेसर-इन-चार्ज (सेमिनार) डॉ. विजयकृष्ण कारी ने किया। आईआईटी भुवनेश्वर परिसर के छात्रों, संकाय सदस्यों, कर्मचारियों और निवासियों ने बातचीत में भाग लिया और बातचीत के बाद इंटरैक्टिव सत्र में शामिल हुए।
